International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 313-314

कुषाणयुगीन कला में नारी अंकन

गुंजन बैस
प्राचीन इतिहास संस्कृति, एवं पुरातत्व विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश भारत।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही मानव अपने मन की कल्पनाओं एवं भावनाओं का प्रतिमाओं के रूप में उत्कीर्ण करता रहा है। भारत में मूर्तिकला का प्रयोग देव प्रतिमाओं के अतिरिक्त अंलकरण हेतु तथा श्रृंगार भावना की अभिव्यक्ति हेतु भी किया गया है।

प्रथम शताब्दी ईसवी में कुषाण राजवंश के समय मथुरा कला अपने चरमोत्कर्ष थी। कनिष्क के शासनकाल में कला, संस्कृति एवं व्यवस्था स्वतः स्फुरित रही है। इस युग की कला ने यद्यपि पूर्ण रूप से धार्मिक आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त की, तथापित आभिव्यंजना की इच्छा, सृजन की उत्तेजना और सौन्दर्य प्रियता भी मूर्तिकारों को प्रेरणा देने में सहायक सिद्ध हुई जिसका परिणाम हमें मथुरा कला की श्रृंगारिक नारी प्रतिमाओं में मिलता है।

कुषाणकालीन नारी प्रतिमाओं का अंकन अलंकारिक रूप में हुआ है किन्तु अलंकारिकता के साथ–साथ मूर्तिकारों ने नारी की मुद्राओं, भाव भंगिमाओं आदि सभी में स्वभाविकता लाने का पूर्ण प्रयास किया है। मथुरा के मूर्तिकारों ने नारी अंग प्रत्यंग की रचना बड़ी कुशलता एवं तन्मयता से की हैं। मूर्तिकारों ने जहां स्वर्गीय आकृतियाँ बनायी हैं, वही रानी, सेविका तथा साधारण स्त्रियों का अंकन भी बखूबी से किया है। कुषाण कालीन नारी प्रतिमायें, नारी एवं प्रकृति की प्रजनन एवं पोषण की क्रियाओं एवं शक्तियों से परिपूर्ण हैं।

कुषाणकालीन नारी प्रतिमाओं में अद्भुत भावोदृवेता लालित्य, भाव व्यंजना, स्वाभाविकता, रमणीयता, माधुर्यता, अभिव्यक्ति की सजीवता, रंग एवं संयोजन आदि ऐसे तत्व है जिन्होंने इस युग की कला को मौलिकता प्रदान की है। इस युग की कला ने स्वच्छन्द एवं स्वतंत्र रुप धारण कर लिया था। मूर्तिकारों ने जो भी कुछ सृजित किया वह पूर्णतः स्वभाविक प्रतीत होता है जीवन में उसने नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया। यह कथन अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि भारतीय मूर्तिकला में इतना अधिक सृजनात्मक गुण इससे पूर्व की मूर्तिकला में दिखायी नहीं देता। कुषाणकालीन प्रतिमायें मानवीय भावनाओं से युक्त हैं तथा भाव प्रदर्शन में पूर्णतः समर्थ है। साधारण दार्शनिक विचारानुसार यह कला न तो रूप में किसी शैली का अनुकरण है और न यथार्थ की पूर्ण साक्षी है और न ही प्रकृति ज्ञान का प्रयोजन है, बल्कि वह मानव मस्तिष्क द्वारा समझे जाने वाला एक आंतरिक सौन्दर्य है और प्रकृति के अन्तरिक यथार्थ की व्याख्या है।

कुषाण युग की कला अपनी संवेदनशीलता, लौकिकता और गतिशीलता के कारण विख्यात है।[1] मथुरा कुषाणों की पूर्वी राजधानी थी और तक्षशिला–पाटलिपुत्र के महत्वपूर्ण मार्ग पर स्थित थी और यहां व्यवसायी रूकते थे।[2] इन व्यवसायियों द्वारा प्रदत्त धन का उपयोग धार्मिक संरचनाओं के निर्माण और कार्यों में किया जाता था। जिसने इस नगर को न केवल महानगरीय रूप प्राप्त हुआ वरन् इससे कला में नस्लीय तथा धार्मिक–संभाव स्थापित करने में भी सहायता मिली। यही कारण था कि यहां विदेशी प्रभाव में कलागत क्षेत्र में नए तत्वों का समावेश हुआ और कला की प्रकृति धर्मनिरपेक्ष बनी रही। मथुरा में ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में राजनैतिक रुप में वाह्य प्रभाव प्रखर हुआ लेकिन फिर भी मूर्तिकारों को अपनी रूचियों के अनुसार कला के प्रदर्शन की छूट मिली और इसी कारण कला में अनेक ऐसे अभिप्रायों के अंकन को प्रश्रय मिला जिसमें कलाकार की अपनी इच्छा प्रतिबिम्बित होती थी।

भारत में कुषाणयुगीन मूर्तियां मुख्यतः मथुरा, सांची, सारनाथ, श्रावस्ती, अहिच्छत्र, संधोल, महास्थान, कौशाम्बी, कसया, तक्षशिला और चन्द्रकेतुगढ़ से प्राप्त हुई है। लेकिन इन सभी स्थलों में मथुरा का स्थान सबसे अग्रणी है। मुख्य प्रेरक तथा मूर्तियों की बहुल मात्रा में मिलने के कारण उत्तर मध्य भारत में विकसित कुषाणकला को मथुरा कला के नाम से भी जाना जाता है। मथुरा का सम्बन्ध बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण तीनों धर्मों से है।[3] इस दृष्टि से मथुरा धर्म के क्षेत्र में आदर्श साक्ष्य प्रस्तुत करता है। जो प्राचीन भारत में एक विशेष मतावलम्बी शासक द्वारा न की जाने वाली छेड़छाड़ का आदर्श साक्ष्य प्रस्तुत करता है। ऐसे बहुत कम स्थल मिलते है जहाँ एक समय में इतनी अधिक धार्मिक विविधता प्रदर्शित होती है और साथ–साथ पुरातन परम्परा को भी नई व्यवस्था में आत्मसात किया गया हो।[4]

कुषाणयुग की मथुरा शैली में नारी का उत्कीर्णन बड़ी संख्या में हुआ है। नारी को यहां मां, युवती, प्रेमिका, मुग्धा, अगना, दासी, वेश्या, रमणी, नटी आदि विविधरूपों में जीवंत किया गया है।[5] मूर्तियां नारी के सामाजिक संदर्भ में ग्राह्यता की स्थिति को दर्शाती है। मूर्तियों में परिलक्षित विविध मुद्राएं, उद्यान एवं सलिल क्रीड़ा मनोरंजन, नृत्य, संगीत जैसी गतिविधियों में उसकी सहभागिता, उसकी आत्मिक इच्छाओं की अभिव्यक्ति के पहलु को स्पष्ट करती है।[6] मथुरा शैली की अनेक मूर्तियों में नारी को अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण रूप में अंकन किया गया है और व स्वर्ग की लुभावनी अप्सराओं यक्षियों, वृक्षिकाओं के रूप में जिस छवि को साकार करती है उसे श्रृंगारिक परिप्रेक्ष्य में न लेकर सृजनात्मकता के प्रतीक स्वरुप ग्रहण किया जाना चाहिए।

कुषाणयुगीन कला में एक तरह से सामूहिकता के स्थान पर वैयक्तिकता को प्रश्रय दिय गया। लेकिन व्यक्तिगत अभिप्रायों में भी नारी के अंकन को प्रधानता प्रदान की गई जो कलाकार की ऐच्छिकता के साथ व्यवसायियों की कलात्मक अभिरूचियों एवं नगरीय जन जीवन की सौन्दर्य बोधक आवश्यकताओं की मांगों का परिचायक था। इन मूर्तियों में नारी यौवन अपने पूरे उभार पर प्रतिबिम्बित होता है और आकर्षक मुद्रा में विलासात्मकता के उपार्जन को साकार परिलक्षित होती है। एक हाथ को ऊपर उठाए और दूसरे में कोई वस्तु ग्रहण किए त्रिभंग मुद्रा में नारी का अंकन कलाकारों की मथुरा शैली में अत्यन्त प्रिय मुद्रा है। इन मूर्तियों में प्रायः नारी अलंकरणों से तो प्रयुक्त है पर वस्त्र के नाम पर

न्यूनतम, महीन वस्त्र या कुछ भी धारण नहीं किए है।[7]

उपसंहार

कुषाणयुगीन नारी मूर्तियों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि कलाकार ने किस प्रकार से निर्जीव पाषाण पर निर्मित नारी आकृतियों को कलात्मक रूप से जीवतं स्वरूप प्रदान किया। कलाकार द्वारा प्रदान किया गया नारी सौन्दर्य का बहु आयामी अंकन पूरी तरह से सफल रहा और मूर्तियों को त्रिआयामी रुप प्रदान करने की उसकी परिकल्पना भी साकार हुई।[8] नारीगत सौन्दर्य जहां उत्साह, प्रफुल्लता एवं आकर्षण का पर्याय था वही नारी शरीर का लम्बा आकार, सुघर टागें, स्तन, नारी नितम्ब एवं सहज शारीरिक उभार प्रतीकात्मक रुप से सृजनात्मकता के पर्याय होने के साथ ही तनाव या विश्रांति दोनों ही स्थितियों में शारीरिक मांसलता को जिस रूप में प्रस्तुत करते थे वह भारतीय परिदृश्य में अब तक दुर्लभ थी।

संदर्भ

1. शर्मा, आर0सी0 'बुद्धिस्ट आर्ट ऑफ मथुरा', पृष्ठ 132।
2. कुमार, जितेन्द्र, 'मास्टरपीसेज ऑफ मथुरा म्यूजियम' पृष्ठ 15।
3. कुमार, जितेन्द्र, 'मास्टरपीसेज ऑफ मथुरा म्यूजियम' पृष्ठ 15।
4. क्जूमा, स्टैनिस्लों जे0 कुषाण स्कल्पचर : इमेजेस फ्रॉम अर्ली इण्डिया, पृष्ठ 8।
5. श्रीवास्तव, रानी, 'कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज'; पृष्ठ 18।
6. श्रीवास्तव, रानी, 'कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज'; पृष्ठ 38।
7. गुप्ता, एस0पी0, 'कुषाण स्कल्पचर्स फ्रॉम संघोल : ए रिसेन्ट डिस्कवरी', पृष्ठ 23।
8. कुमार, जितेन्द्र, 'मास्टरपीसेज ऑफ मथुरा म्यूजियम' पृष्ठ 15।